'साहित्य के माध्यम से समाज के हर वर्ग की आवाज उठाना जरूरी'

- साहित्य उत्सव में विभिन्न विषयों पर कुल 21 सत्रों का किया गया आयोजन
- साहित्य जगत के दिग्गजों के साथ न्यायपालिका के सम्मानित व्यक्तियों ने की गहन चर्चा

मेघदूत रंगशाला में साहित्य उत्सव में दास्तान-ए-महाभारत की उर्दू भाषा में प्रस्तुति देते रीतेश यादव और फौजिया दास्तानगो • ध्रुव कुमार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य प्रेमियों के लिए आयोजित भव्य साहित्य उत्सव में सोमवार को विभिन्न विषयों पर कुल 21 सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें साहित्य, कला, संस्कृति, भाषा और सामाजिक न्याय जैसे विविध विषयों पर साहित्य जगत के दिग्गजों के साथ-साथ न्यायपालिका के सम्मानित व्यक्तियों ने गहन चर्चा की।

उत्सव के एक विशेष सत्र में भारत के पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति ने साहित्य और सामाजिक न्याय के आपसी संबंधों पर विचार प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने की। उन्होंने कहा कि समाज में न्याय की स्थापना केवल अदालतों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि साहित्य के माध्यम से भी समाज के हर वर्ग की आवाज को प्रमुखता से उठाना आवश्यक है। न्याय की परिभाषा तब ही सार्थक होगी, जब समाज के अंतिम व्यक्ति को उसका अधिकार मिलेगा और साहित्य इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वहीं, इस विषय पर साहित्यकार एपी माहेश्वरी ने चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य हमेशा से समाज का आईना रहा है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि पीड़ितों और वंचितों की आवाज भी है। साहित्य के माध्यम से हम समाज में समानता, न्याय और समरसता का संचार कर सकते हैं।

इसके बाद साहित्यकार मुकुल कुमार और तमिषाची थंगापांडियन ने कहा कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी कई महान साहित्यकारों ने सामाजिक न्याय को अपने लेखन का मुख्य आधार बनाया है और समय-समय पर जनता के अधिकारों के लिए आवाज उठाई है। इस बीच यह बात उभरकर सामने आई कि साहित्य, सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता लाने का एक प्रभावी माध्यम है। वहीं, अन्य सत्रों में स्वतंत्रता पूर्व भारतीय साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा, आमने- सामने संवाद, कवि सम्मेलन, भारतीय साहित्य परंपरा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के भविष्य पर गहन मंथन हुआ। इस दौरान दर्शकों को साहित्य के विभिन्न पहलुओं को जानने और समझने का अवसर मिला।

वहीं दूसरी ओर साहित्य उत्सव के चौथे दिन के समापन पर दानिश इकबाल की पटकथा दास्तान-ए-महाभारत की कहानी को फौजिया दास्तानगो और रितेश यादव ने उर्दू भाषा में दर्शकों को सुनाई। उनके इस अनोखे अंदाज ने देशभर से आए साहित्यकारों, कवियों और लेखकों का दिल जीत लिया। सभी ने दोनों की खूब प्रशंसा की।